INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

अफ़ग़ानिस्तान के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता

(Mahatma Gandhi in the context of Afghanistan relevance of ideas)

डॉ. मनोजकुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
(इतिहास विभाग)
राजा हरपाल सिंह पी.जी. कॉलेज सिंगरामऊ, जौनपुर
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय (उत्तरप्रदेश)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/02.2022-24357171/IRJHIS2202013

प्रस्तावना :

आज मानव सभ्यता 21 वीं शताब्दी में प्रवेश कर चुकी है किन्तु हम इस बात की कल्पना नहीं कर सकते हैं कि यदि आज के युग में महात्मा गाँधी होते तो वे किस प्रकार विश्व - समुदाय को प्रभावित करते। यद्यपि समय - समय पर फ़िल्मों, नाट्य रूपान्तरणों आदि के माध्यमों से गाँधीजी के व्यक्तित्व एवं चरित्र को प्रस्तुत करके जन-मानस में जागरुकता पैदा करने का प्रयास किया जाता रहा है। प्रत्येक वर्ष गाँधीजी की जयंती को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। वैश्विक स्तर पर भी उनके जन्मदिन को "**अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस**" घोषित किया गया है। क्या ऐसा करने मात्र से ही विश्व में लोक - कल्याणकारी तंत्र स्थापित हो जाता है जिसका सपना गाँधीजी ने देखा था? वर्तमान समय आधुनिकीकरण का है और हम इस आधुनिक विश्व का हिस्सा हैं अतएव यह स्वाभाविक है कि प्रत्येक व्यक्ति हर क्षेत्र में बदलाव लाने की सोच रखता है किन्तु यह बदलाव वह हमेशा दूसरों में ही देखना चाहता है। ऐसा होना क्या हमारी संकीर्ण विचारधारा को नहीं दर्शाता है? ऐसी विचारधारा के साथ क्या हम स्वयं का उत्थान कर सकते हैं और जब बात समाज या देश की हो तो ऐसी विचारधारा देश की प्रगति में कितनी सहायक होगी? ऐसे अनेक प्रश्न मन में उत्पन्न होते हैं जिनका समुचित समाधान हमें नहीं मिल पाता है। ऐसे में गाँधीजी का निम्नलिखित कथन महत्त्वपूर्ण हो जाता है-

"जो बदलाव तुम दुनिया में देखना चाहते हो वह स्वयं में लेकर आओ।"

गाँधीजी के करिश्माई व्यक्तित्व ने नकेवल भारत अपितु समस्त विश्व को प्रभावित किया। महान वैज्ञानिक **अल्बर्ट आइन्सटीन** ने गाँधीजी के बारे में कहा था **"भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़ -मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।"**

गाँधीजी के विचार न केवल समस्त विश्व के लिए प्रेरणादायी थे अपितु उनकी सोच की नयी दिशा के निर्धारण में भी सहायक रहे जिसके फलस्वरूप उनके सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण को नया आयाम मिला। महात्मा गाँधी ने जिस तरह से दुनिया भर में उपेक्षित समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की समस्याओं के समाधान के लिए संघर्ष किया उससे लैटिन अमेरिका, एशिया और मध्य पूर्व यूरोप में चल रहे रहे आंदोलनों को एक नयी प्रेरणा और ऊर्जा मिली।

वैश्वीकरण के इस युग में प्रत्येक देश अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है और जिसके लिए सभी देशों ने अलग-अलग नीतियाँ अपना रखी हैं।कोई सामरिक शक्ति के बल पर, कोई आर्थिक नीतियों के सहारे, तो कोई धर्म-प्रसार के माध्यम से अन्य देशों को चुनौती दे रहा है। यद्यपि इस परिदृश्य को हम आधुनिकता के चश्मे से देख रहे हैं किन्तु इसमें कहीं न कहीं उनकी हिंसात्मक प्रवृत्ति छिपी है। एक ओर तो सभी देश **संयुक्त राष्ट्रसंघ** जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर आकर आतंकवाद, प्राकृतिक असंतुलन आदि के विरोध में एक जुट होने का आह्वान करते हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसी हिंसात्मक प्रवृत्तियों को प्रश्रय देते हैं। यहाँ **हमारा आशय किसी एक देश या किसी नीति विशेष की आलोचना करना नहीं है अपितु लोकतांत्रिक मूल्यों को समझने एवं उन्हें आत्मसात् करने के महत्त्व को रेखांकित करना है।** गाँधीजी के दृष्टिकोण में कोई देश तभी प्रगति कर सकता है जब वहाँ के लोगों में कल्याणकारी भावनाएँ निहित हों और उस देश के नेतृत्त्व द्वारा नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों को सर्वोपरि रखा जाता हो। गाँधीजी ने नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों पर चलते हुए समस्त मानव-जाति को सत्य और अहिंसा का संदेशदिया। गाँधीजी का सत्याग्रह उनकी कार्य-पद्धति के मूल में था और इसी कार्य-शैली के माध्यम से ही उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्त्व किया।

तेज़ी से बदलते विश्व-परिदृश्य में जैसे-जैसे मानव-जाति के समक्ष हिंसा, आर्थिक मंदी, भूख़, बेरोज़गारी और घृणा जैसी विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होने लगी हैं, वैसे-वैसे गाँधीजी की विचारधारा लोगों की समझ में आने लगी है एवं उस विचारधारा को अपनाने की आवश्यकता भी महसूस की जाने लगी है।

गाँधीजी की विचारधारा की प्रासंगिकता को अफ़ग़ानिस्तान के सम्बन्ध में अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। अफ़ग़ानिस्तान अभी विकास के पथ पर अग्रसर ही था कि अमेरिकी सैनिकों के वापस जाते ही **चरमपंथी संगठन तालिबान** पुनः सत्ता पर क़ाबिज़ हो गया और सत्ता सँभालते ही लोकतांत्रिक मूल्यों एवं अधिकारों का हनन करते हुए अपने चरमपंथी क़ानूनों को लागू कर दिया। एक बार फिर से मध्ययुगीन फ़रमानों का दौर वापस लौट आया और अफ़ग़ानिस्तान की जनता इन क़ानूनों को मानने के लिए मज़बूर हो गयी। वहाँ की महिलाएँ भी इन नियमों से अछूती नहीं रहीं। उन पर भी पाबंदियाँ लगा दी गयी। उनके लिए बुर्के में रहना ज़रूरी तो बना ही दिया गया और इसके साथ ही 10 साल से अधिक उम्र की लड़कियों के स्कूल जाने पर भी रोक लगा दी गयी। यहाँ तक कि घरों की खिड़कियों के शीशे काले रंग से रंगवा दिए गए एवं टीवी, संगीत और सिनेमा बैन कर दिये गये। **बुद्ध** की ऐतिहासिक मूर्ति को तोड़कर **तालिबान** ने अपनी धार्मिक कट्टरता की भावना भी पूरी दुनिया के सामने प्रदर्शित की।

9/11 की आतंकी वीभत्स घटना से विश्व के देशों को आतंकवाद की गम्भीरता समझ में आयी। अमेरिका के

साथ अनेक देशों ने आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में अपनी प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित की। आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में उन देशों के लिए भी एक नयी उम्मीद जगी जिन्होंने आतंकवाद की पीड़ा सही थी ऐसी अपेक्षा रही कि अमेरिका के नेतृत्त्व में आतंकवाद के विरुद्ध होने वाली लड़ाई में पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता होगी किन्तु वैश्विक स्तर पर अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त हो सका। अमेरिकी सेना ने दो दशक तक अफगानिस्तान में रहकर शान्ति और व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया परंतु **20 सालों** में **तालिबान** दोबारा मज़बूत हो गया और अफ़ग़ानिस्तान में **लोकतांत्रिक - अधिकार** और **सामाजिक सुरक्षा** ख़तरे में पड़ गयी। हर जगह अनिश्चितता का माहौल छा गया और लोग अफ़ग़ानिस्तान छोड़ने को मज़बूर हो गए। पिछले कई वर्षों में भारत ने भी अफ़ग़ानिस्तान के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है परंतु तालिबान की वापसी ने विकास के सारे रास्ते बंद कर दिए और अफ़ग़ानिस्तान को **अशांति**, **अशिक्षा, ग़रीबी** एवं **पिछड़ेपन** की तरफ़ अनिश्चित काल के लिए धकेल दिया।

ऐसी परिस्थिति में गाँधीजी का कथन उचित प्रतीत होता है जब उन्होंने शान्ति की अपील करते हुए यह कहा था- **"जब नैतिक आधार पर हार होती है, तभी युद्ध का वास्तविक अंत होता है।"**

गाँधीजी के अनुसार हिंसा के माध्यम से किसी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता है। गाँधीजी का मानना था कि युद्ध में लोगों के मरने के साथ ही उनकी आत्मा भी मर जाती है और जहाँ आत्मा मर जाती है ,वहाँ मानवता का निवास नहीं होता। उनके अनुसार बातचीत ही ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से किसी समस्या के पूर्ण समाधान तक पहुँचा जा सकता है।

गाँधीजी ने विभिन्न राजनीतिक मुद्दों को उठाने के लिए सत्याग्रह का रास्ता अपनाया एवं आम जनता को भी यह सिखाया कि किसी भी समस्या या संघर्ष के समाधान के लिए सत्याग्रह का प्रयोग यदि अहिंसात्मक ढंग से किया जाये तो वह अत्यंत प्रभावी होता है और स्वयं भी इसे राजनीतिक मुद्दों के हल के लिए अपनाया। आज **वैश्विक-शांति** की बात हो या अत्याचार व हिंसा के विरोध की बात हो अथवा हिंसा का प्रत्युत्तर अहिंसा के माध्यम से देने की बात हो, तो गाँधीजी के सत्याग्रह की विचारधारा की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। इस प्रकार गाँधीजी के **सत्याग्रह को युद्ध के नैतिक विकल्प** के रूप में देखा जा सकता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि गाँधीजी की किसी धर्म विशेष में आस्था नहीं थी। उनके लिए सभी धर्म समान थे और धर्म का अहिंसात्मक पक्ष ही महत्त्वपूर्ण था जिसमें समानता और सहिष्णुता की भावना निहित हो। गाँधीजी **सत्य को ही एक मात्र ईश्वर मानते थे तथा ईश्वर की प्राप्ति एवं अनुभव का आधार सत्य और अहिंसा को बनाया ।**

गाँधीजी के व्यक्तित्त्व में अनेक गुणों का सम्मिश्रण था। कहने का तात्पर्य यह है कि महात्मा गाँधी में कुशल नेतृत्त्व के गुण तो विद्यमान ही थे साथ ही वे एक अच्छे दार्शनिक, समाज-सुधारक, आचार-शास्त्री एवं अर्थशास्त्री भी थे। **आज अफ़ग़ानिस्तान में भी महात्मा गाँधी जैसे योग्य नेता और उनके कुशल नेतृत्त्व जैसी नेतृत्त्व शैली की अत्यंत आवश्यकता है जो अफ़ग़ानिस्तान को एक नयी दिशा प्रदान कर सके और उसे विकास के पथ पर आगे ले जाये।**

यदि इन सभी पहलुओं से देखा जाये तो गाँधीजी की विचारधारा की भूमिका अत्यंत ही विस्तृत और

महत्त्वपूर्ण है। **युद्ध एवं शान्ति, आतंकवाद, मानवाधिकार, सतत् विकास, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक- राजनैतिक अशांति और राजनैतिक - प्रशासनिक भ्रष्टाचार आदि से सम्बंधित ऐसी अनेक समकालीन चुनौतियाँ हैं जिनका समाधान गाँधीजी की अहिंसात्मक पद्धति में है।**

अतः यह कहना ग़लत नहीं होगा कि **21 वीं** सदी के लोगों को गाँधीजी के सिद्धांतों, विचारों एवं दर्शन से बहुत कुछ सीखना अभी भी शेष है। यदि उनके विचारों, सिद्धांतों एवं दर्शन को स्पष्ट सोच तथा समुचित ढंग से नेतृत्व शैलियों में सम्मिलित किया जाये तो कठिन परिस्थितियों में भी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है और सही मायने में गाँधीजी के विचारों एवं दर्शन की सार्थकता सिद्ध होगी।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि गाँधीजी के सिद्धांत, उनके विचार एवं दर्शन कल भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं और आने वाले समय में भी प्रासंगिक रहेंगे तथा वैश्विक स्तर पर लोगों को प्रेरणा देते रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1. डॉ. मित्तल ए. के., भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास
2. डॉ. सिंह अनिलकुमार, आधुनिक भारत के निर्माता
3. Mahatma Gandhi And The Nationalist Movement – NCERT
4. बिपिन चंद्रा और अन्य , भारत का स्वतंत्रता संघर्ष
5. नवभारत टाइम्स- समाचार-पत्र
6. विकिपीडिया

International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies
IRJHIS